सूर्या फाउण्डेशन

SURYA FOUNDATION

आदर्श गाँव योजना

जैविक कृषि

भारत में हरित क्रांति के नाम पर अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों, हानिकारक कीटनाशकों, हाइब्रिड बीजों एवं अधिकाधिक भूजल उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति, उत्पादन, भूजल स्तर और मानव स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट आई है। किसान बढ़ती लागत, बाजार पर निर्भरता के कारण खेती छोड़ रहे हैं और आत्महत्या तक करने पर मजबूर हो रहे हैं। बाद में आई विदेशी तकनीक व जैविक खेती भी जटिल होने के कारण अन्ततः किसान को बाजार पर ही निर्भर बनाती है, अतः आवश्यक है ऐसी कृषि पद्धति की जिसमें किसान को बार-बार बाजार ना जाना पड़े, उत्पादन ना घटे, खेत उपजाऊ बने रहे व मानव रोगी ना बने-यह गौ आधारित जैविक खेती से ही संभव है। जिसमें खेती के लिए बाजार की बहुत कम ही जरूरत पड़ती है।

suryafoundation1 | suryafnd | surya_foundation | suryafoundation
Email : suryafnd@gmail.com | Website : www.suryafoundation.org

गौतम नायक

जैविक खेती
एक अभिनव प्रयोग...

जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन, जैसे पिए पानी वैसे होवे वाणी।

- हमारे खान-पान का हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर सीधा असर पड़ता है। सन 1966 से 1967 में देश में हरित क्रांति का दौर शुरू हुआ। शुरुआत के 25-30 वर्षों तक तो कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हुई लेकिन अब पिछले 15-20 वर्षों से उत्पादन में लगातार गिरावट देखने को मिल रही है।
- रासायनिक खाद, कीटनाशकों के बेतहाशा उपयोग ने हमारे जमीन, जल और जीवन को प्रदूषित कर दिया। हमारे सामने वह कैंसर एक्सप्रेस है जिससे सैकड़ों कैंसर के मरीज अपना इलाज कराने जाते हैं। अभी-अभी जारी विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में भारत में कैंसर की सुनामी आने की चेतावनी दी गई है। इन सबके मूल में निश्चित रूप से हमारा दूषित खान-पान है।
- कीटनाशकों के लगातार उपयोग से जमीन बंजर हो रही है। किसानों की लागत बढ़ती जा रही है। इस विषम परिस्थिति से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय है-जैविक खेती।
- यह स्थिति अत्यंत सरल एवं कम खर्चीली है। गाय के गोबर एवं गोमूत्र से जीवामृत, घन जीवामृत जैसी खाद और कीटरोधक ऐसी अनेक तरह के उत्पाद बनाए जा सकते हैं, इससे भूमि में कार्बन की मात्रा में बढ़ोतरी होती है। भूमि का पी.एच. मान संतुलित रहता है।
- भूमि सुधार एवं आत्मनिर्भर कृषि के लिए जैविक खेती एक वरदान है। इस विषय के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार के लिए सूर्या फाउण्डेशन विगत अनेक वर्षों से कार्यरत है।
- इसे और अधिक विस्तार देने के लिए सूर्या साधना स्थली झिंझोली और राष्ट्रीय जैविक खेती केन्द्र गाजियाबाद के तत्वाधान में एक दिवसीय जैविक कृषि सम्मेलन का आयोजन वर्ष 2018 में किया गया था।
- इस अवसर पर आए किसानों के बीच कृषि वैज्ञानिकों ने जैविक खेती पर अपने वक्तव्य रखे एवं मार्गदर्शन किया। जैविक खेती के सरल नुस्खे, फसल चक्र परिवर्तन, मिट्टी परीक्षण, फलउद्यान, अपना बीज स्वयं तैयार करना, पशुपालन अनेक विषयों पर चर्चा की।
- इस कार्यक्रम की सफलता को देखकर वर्ष 2020 में इसी प्रकार के कार्यक्रम पं. बंगाल के दार्जिलिंग मध्य प्रदेश के विदिशा और हरियाणा के सोनीपत जिले में आयोजित किया गया। इन सभी में कुल मिलाकर 2000 किसान लाभान्वित हुए।
- इसके अनुवर्ती प्रयास में झिंझौली ग्राम को ग्राम विकास केन्द्र बनाकर उसके आसपास के 50 गाँवों में जैविक खेती का कार्य भी शुरू हो गया है। किसान इस कम खर्चीली, लाभप्रद, विषमुक्त खेती की ओर बढ़ रहे हैं।

जैविक खेती का आधार पर्यावरण चक्र के तहत सभी जीव एवं वनस्पतियों के भोजन की एक पूरक व्यवस्था है जिसका प्रमाण है बिना किसी मानवीय सहायता के जंगलों में खड़े हरे-भरे पौधे व उनके साथ रहने वाले जीव जंतु। इस प्राकृतिक व्यवस्था के अनुरूप खेती करना ही जैविक खेती है।

जैविक खेती के मुख्य आधार कामधेनु कृषि पद्धति

ललित अग्रवाल
प्रांत गोसेवा प्रमुख, पं. बंगाल

- प्रत्येक कृषि कार्य कृषि-पंचांग के अनुसार करें। ऐसा करने से कई प्रकार के लाभ होते हैं।
- प्रति एक एकड़ भूमि की सीमा पर औसतन 8 से 10 पेड़ होने चाहिए। ऐसे पेड़ जिनकी छांव कम हो। इसके अलावा मेड़ पर तुलसी के पौधे लगाने चाहिए। ये फसल को रोग से बचाते है।
- खेत पर प्रतिदिन सुबह शाम अग्निहोत्र करें।
- बुवाई से 8 दिन पहले खेत में प्रति एकड़ में 15 किलो वटवृक्ष या पीपल के पेड़ के आसपास की मिट्टी बिखेर दें। अग्निहोत्र की भस्म भी 5 किलो बिखेर दें। साथ ही कम्पोस्ट खाद / सींग खाद भी डाला जा सकता है। खाद डालने के तुरंत बाद खेत की जुताई करें।
- बुवाई से 1 दिन पहले खेत में मटका खाद का उपयोग करें एवं बीज को बीजामृत (गौ-मूत्र) से उपचारित करें।
- चार पत्ते आने पर सिलिका खाद का उपयोग करें।
- प्रत्येक 15 दिनों में मटका खाद, अग्निहोत्र भस्म, गौ-मूत्र कीटनियत्रंक और छाछ का प्रयोग करें।
- फूल आने पर पुन: सिलिका खाद का उपयोग करें।
- समय-समय पर निराई-गुड़ाई करें और खर-पतवार से खेत का आच्छादन करें।
- फसल चक्र और अंतवर्ती फसल प्रक्रिया का ध्यान रखें।

जैविक खेती में सूर्या फाउण्डेशन के बढ़ते प्रयास...

विकास विश्वकर्मा
इंचार्ज चयनित आदर्श गाँव

- पिछले वर्ष सूर्या फाउण्डेशन के नेतृत्व में चयनित आदर्श गाँव के अंतर्गत 7 राज्यों के 13 गाँवों में किसान गोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमे कुल 1510 किसानों ने भाग लिया। गोष्ठी द्वारा वर्तमान में हो रहे रासायनिक खाद, कीटनाशकों से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में बताया गया।
- किसानों को जैविक खेती के प्रति जागरूक करने के लिए जैविक कृषि विशेषज्ञों के सहयोग से जैविक खेती करने के लाभ और सरल तरीकों को बताया गया।
- किसान गोष्ठियों में बताये गये तरीके से 110 किसानों ने जैविक खेती शुरू की, जिसमें गेहूं, गन्ना, चना, दालें आदि की फसलें लगायी हैं। उनकी उपज भी अच्छी है।
- हम अपने परिवार के लिए Family Doctor रखते हैं लेकिन आज इससे अधिक Family Farmer की आवश्यकता है।

गौ-उत्पाद बनाने की विधि

कामधेनु चन्दन धूप

सामाग्री-

250 ग्राम लाल चन्दन, 250 ग्राम नागरमोथा, 250 ग्राम कपूर काचरी, 250 ग्राम जटामासी, 100 ग्राम राल, 100 ग्राम गुड़, 100 ग्राम गोंद, 750 ग्राम गौमूत्र, 2 किलो गोबर का पाउडर, 6 लीटर गोबर स्वरस।

निर्माण विधि-

उपरोक्त सामाग्री एकत्रित कर मिला लें। उसके गाद गोला बनाने के लिए आवश्यक गोबर स्वरस मिलाऐं अच्छी तरह से मसल लें। बाद में एक पाइप जिस आकार की बत्ती बनाना हो उसी आकार की गोल प्लास्टिक लोहा की नाली लेकर धक्का देने वाली लकड़ी या लोहे की छड़ी से ठूस कर भरें। माल को बाहर निकालें। अच्छा सूखने तक धूप में सुखाऐं उपरान्त पैकिंग करें।

उपयोग-

उपासना विधियों में धूप प्रज्जवलन का अतिशय महत्व है। हवा सुद्वी, वायु प्रदूषण रोंक कर पर्यावरण संतुलन रोगाणु नाशक एवं स्वास वर्धक है।

कामधेनु मंजन

सामाग्री-

2 किलो 500 ग्राम गोबर कण्डे का कोयला, 400 ग्राम नमक, 50 ग्राम कपूर भीमसेन, 50 ग्राम अजवायन सत, 1 लीटर 500 ग्राम पानी

निर्माण विधि

सादा कपूर व अजवायन सत को एक सीसी में मिला कर भर लें यह स्वत: तेल में परिवर्तित हो जाएगा। फिर नमक को पानी में घोलना है। और उपरोक्त सामाग्री को उपास में एक साथ मिला लें। मिल जाने के बाद सिल्वट पर अच्छे से बारीक से पीस लें। फिर उसके बाद डिब्बी में पैकिंग करें।

गोमूत्र फिनाईल

सामग्री :

गोमूत्र 1 लीटर, नीम पत्र हरा 200 ग्राम, पाइन तेल (इमलसीफायर युक्त) 50 ग्राम, उबाला हुआ पानी 700 मिली

निर्माण विधि :

नीम-पत्र को गोमूत्र में डाल कर उबाले। चौथाभाग रहने का ठंडा कर छान ले। बाद में पाइन ऑयल और गोमूत्र-नीम-क्वाथ हिलाते हुए कर मिश्रित करें। बाद में उसमें धीरे-धीरे पानी डाल हिलाते रहें।

सब मिलाने के बाद भी थोड़ी देर तक हिलाते रहे, जिससे अच्छा फिनाइल तैयार होगा। हिलाने के लिए नीम लकड़ी का प्रयोग करें, बर्तन हमेशा कांच, चीनी मिट्टी या प्लास्टिक का रखे। (पैकिंग 400 ग्राम, 1 लीटर)

उपयोग :

कीटनाशक, जंतुनाशक, सफाई उपयोगी।

जैविक कृषि सम्मेलन, जिला सोनीपत (हरियाणा)–2018

जैविक कृषि सम्मेलन

दार्जिलिंग (प. बंगाल)

की कुछ झलकियाँ

विदिशा (मध्य प्रदेश)

जैविक खेती : कुछ अनुभव-कुछ परिणाम

हरिभान सिंह
नगला अबुआ
(मथुरा)

मैंने सूर्या फाउण्डेशन की तरफ से दीनदयाल धाम में वर्ष 2019 में एक गौ-आधारित कृषि कैम्प किया। इस कैम्प में श्री ललित अग्रवाल जी का मार्गदर्शन मिला, जिसमें उन्होंने जैविक खेती और गौ आधारित खेती के बारे में बताया। देशी गाय के गोबर एवं गोमूत्र के विशेष गुण बताये। इसमें हमें बीजामृत, बीज उपचार, अमृतपानी, पंचगव्य, दंत मंजन आदि बनाना सिखाया गया। जिसके आधार पर मैंने एक बीघा गेहूँ की जैविक खेती की। इसमें मैंने अमृतपानी का छिड़काव किया। फसल बहुत अच्छी रही।

मुझे पिछले साल सूर्या फाउण्डेशन के माध्यम से जैविक खेती और गौ आधारित खेती के बारे जानकारी मिली। जिसमें मैने देशी गाय के गोबर से खाद और अमृत पानी बनाना सीखा। आज मैं पूर्ण रूप से जैविक खेती कर रहा हूँ। फसल के बचाव के लिए अमृतपानी का उपयोग कर रहा हूँ। जिससे कि हमारे खेत की पैदावार बढ़ गई है और फसल पर कीड़ों का प्रकोप कम हुआ है। इस बार बढ़िया फसल तैयार हुई। इससे मेरा जैविक खेती में विश्वास बढ़ा है। मैंने 10 बीघा भिंडी, 5 बीघा गेहूँ लगाया है, जो पूर्ण रूप से जैविक है। उसमें किसी भी प्रकार की कोई बीमारी नहीं है। अब मैं कम खर्च में ही अच्छी फसल तैयार कर लेता हूँ।

रामधार सिंह
कादीपुर
(वाराणसी)

प्रमोद कुमार
कंदवा-वाराणसी

मैं 1990 से खेती कर रहा हूँ। लेकिन जैविक विधि से खेती की जानकारी नहीं थी। हमारे गाँव के पास के निवासी कादीपुर के दीपचंद जी के द्वारा मुझे जैविक एवं गौ आधारित कृषि करने की जानकारी प्राप्त हुई। जिससे विगत 1 वर्ष से मैं अपने खेतों में गाय का अमृतपानी बनाकर उसका छिड़काव करना शुरु किया। जिससे हमारे खेत की सब्जियों की पैदावार में बढ़ोत्तरी हुई तथा लागत भी कम लगी। इन सभी का प्रयोग कर मैं अब अच्छी आमदनी प्राप्त कर पाता हूँ।

फसल चक्र

जनवरी : बैंगन, मिर्च, मूली, तरबूज, खरबूज, फ्रेन्चबीन, गाजर, भिण्डी, करेला

फरवरी : पत्ता गोभी, बैंगन, मिर्च, टमाटर, मूली, लौकी, कद्दू, करेला, खीरा, खरबूज, ककड़ी

मार्च : भिण्डी, लौकी, कद्दू, करेला, खरबूज, मूली, तोरई, प्याज, ककड़ी, लोबिया, शलजम

अप्रैल : मूली, अदरक, टमाटर, भिण्डी, ककड़ी, खीरा

मई : बैंगन, चौलाई, ककड़ी, लौकी, शिमला मिर्च, करेला

जून : मेथी, टमाटर, बैंगन, मिर्च, भिण्डी, हल्दी, अदरक, लौकी, कद्दू, करेला, तरबूज, तोरई, पत्तागोभी

जुलाई : टमाटर, मिर्च, पत्तागोभी, भिण्डी, हल्दी, लौकी, कद्दू, करेला, तरबूज, तोरई

अगस्त : मूली, गाजर, आलू, मटर, लौकी, प्याज, सेम, बरबट्टी, धनिया

सितंबर : मिर्च, फूलगोभी, पत्तगोभी, लहसुन, मूली, आलू, गाजर

अक्टूबर : टमाटर, बैंगन, फूलगोभी, मिर्च, प्याज, लहसुन, मूली, धनिया, मेथी, सौंफ

नवंबर : टमाटर, बैंगन, पत्तागोभी, प्याज, मूली, गाजर, धनिया, मेथी

दिसंबर : आलू, तरबूज, खरबूज, शिमला मिर्च, मटर, गाजर, भिण्डी, पालक

जैविक कृषि : कुछ अनुभव-कुछ परिणाम

दिलीप सिंह
गाँव-फिरोजपुर,
जिला-सोनीपत, हरियाणा

आदरणीय श्री ललीत जी, श्री राजेंद्र जी एवं श्री संजय जी द्वारा हमें जैविक खेती की प्रेरणा मिली जो कि पूर्ण रूप से गौ आधारित है। मुझे सूर्या फाउण्डेशन में 5 दिन की ट्रेनिंग मिली। मैं 4 एकड़ में मिश्रित खेती करता हूँ। इस बार मैंने 1 एकड़ में बैंगन, हरी मिर्च, करेले की फसल लगाई है जो बिल्कुल ही जैविक है। संजय जी ने घर पर आकर जीवामृत, गोमूत्र, कीट नियंत्रक के बारे में जानकारी दी। अब मैंनें 3 एकड़ में जैविक गेहूं बोया है। इसमें भी किसी भी प्रकार का कोई नुकसान नहीं हुआ है। मुझे बहुत खुशी है जैविक खेती से खर्चा बहुत कम हुआ है और पड़ोसी किसान भी जैविक खेती के बारे में मुझसे पूछ कर शुरूआत कर रहे हैं।

गौ आधारित ग्राम विकास के लक्ष्य को लेकर सूर्या फाउण्डेशन के नेतृत्व में किसानों द्वारा गौ आधारित खेती जैविक खेती यानि जहर मुक्त खेती करने का विचार बहुत ही अच्छा है। अमृतपानी, गाय का गोबर, गोमूत्र के फसल पर छिड़काव से खेती की पैदावार में बढ़ोतरी हुई, साथ ही फसल रोग मुक्त हुए, रासायनिक खाद से छुटकारा मिला। किसानों की आमदनी बढ़ी है। अमृत पानी के छिड़काव से आवारा पशु फसल नहीं खाते। गौ माता के आशीर्वाद से दंतमंजन, साबुन, शैंपू, धूपबत्ती का उत्पादन शुरु किया। हमारे गांव में इस दंतमंजन के उपयोग से कई ग्रामवासियों का पायरिया रोग दूर हुआ है। साबुन से त्वचा के विकार, खुजली आदि रोग दूर हुए है, पसीने की दुर्गंध भी नहीं आती। धूप बत्ती से घर का वातावरण शुद्ध होता है, गौ-मूत्र फिनाइल से घर रोग मुक्त होता है। इन सब का श्रेय हमारी गौ माता को जाता है। लोगों ने यह काम कम दिनों में ही शुरू कर दिया है और अच्छी बिक्री हो रही है।

मनीष राय
गांव-गढ़ी कुंडल
सोनीपत, हरियाणा

कामधेनु केशतेल

सामग्री : *तिल तेल-1700 ग्राम, नारियल तेल-200 ग्राम, रतन ज्योत-24 ग्राम, जटामांसी-24 ग्राम, कपूरकाचली-24 ग्राम, भांगरा-24 ग्राम, त्रिफला-24 ग्राम, गाय का दूध-2000 ग्राम, नींबू 6 नग, पानी-6 लीटर, सुगंधी-20 मिली*

निर्माण विधि : सर्वप्रथम तिल और नारियल तेल में 6 नग नींबू काट कर डाले, धीमी आंच पे पकावे, बाद भांगरा, त्रिफला, रतनज्येत को आधा अधूरा मसल कर चटनी जैसा बना लें, उसमें गाय का दूध एवं पानी का मिश्रण डाल धीमी आंच पर गरम करें, जब चटचट आवाज बंद हो और झाग आने लगे तब तेल तैयार हुआ समझे। वर्ती परिक्षण (वाती को तेल में भिगो कर जलाने से आवाज बिना जलनी चाहिए) लें। तैयार तेल में कपूर काचली और जटामांसी की पोटलीओ को आठ दिवस तक डुबो के रखें।

जैविक खेती के प्रयोग

जीवामृत

गाय का गोबर	-	10 किलोग्राम
गौमूत्र	-	10 लीटर
गुड़	-	2 किलोग्राम
पीपल / बरगद /	-	1 किलोग्राम
खेत के मेढ़ की मिट्टी		

इन सभी को 200 लीटर पानी में मिलाकर 5-7 दिनों तक रख दें।
नियमित रूप से दिन में 3 बार मिश्रण को हिलाते रहें।

उपयोग : एक एकड़ क्षेत्र में सिचाई जल के साथ प्रयोग करें।

लाभ : भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। भूमि के कृषि अवशेष अपघटन में सहायक है।

घन जीवामृत

गाय का गोबर	-	100 किलोग्राम
गौमूत्र	-	1 लीटर
गुड़	-	1 किलोग्राम
पीपल / बरगद /	-	1 किलोग्राम
खेत के मेढ़ की मिट्टी		

बनाने की विधि

सर्वप्रथम 100 किलोग्राम गाय के गोबर को किसी पक्के फर्श व पॉलीथीन पर फैलाएं। फिर इसके बाद 1 किलो गुड़ व 1 किलो बेसन को डालें। इसके बाद 1 किलो मिट्टी डालकर तथा 10 लीटर गौमूत्र सभी सामग्री को फावड़ा से अच्छी तरह से मिला दें। इस सामग्री को 48 घंटे किसी छायादार स्थान पर एकत्र कर या थापीया बनाकर जूट के बोरे से ढक दें । 48 घंटे बाद उसको छाँव में सुखाकर चूर्ण बनाकर भंडारण करें।

एक बार खेत जुताई के बाद घन जीवामृत का छिड़काव कर खेत तैयार करें।

छाछ का प्रयोग

सामग्री

ताजा छाछ	-	2 किलोग्राम
मटका	-	1
ताँबे का तार	-	100 ग्राम

मटके का मुँह बन्द करने के लिए एक पॉलीथिन और थोड़ी सी रस्सी उसको बांधने के लिए।

सबसे पहले किसी पेड़ की छाँव वाले स्थान पर एक गड्डा खोदेंगे जिसमें मटके को रखा जा सके अब मटके में छाछ को भर देंगे। फिर जो ताँबा है उसको डाल दें। उसके बाद इस मटके का अच्छी तरह से मुँह बन्द कर दें। 20 से 25 दिन बाद आपकी जैविक छाछ कीट नियंत्रक तैयार हो जाएगी।

यह घोल पौधे को बढ़ने के लिए सहायता प्रदान करता है। यह 15 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाकर फसल और फूलों पर करना चाहिए।

जैविक कीट नियंत्रक

गौमूत्र	-	20 लीटर
नीम की पत्तियाँ	-	500 ग्राम
आक की पत्तियाँ	-	500 ग्राम
धतूरे की पत्तियाँ	-	500 ग्राम
लहसुन	-	250 ग्राम
मिर्च	-	200 ग्राम
अदरक	-	200 ग्राम

उपरोक्त पत्तियाँ (नीम, आक, धतूरा) और लहसुन, मिर्च तथा अदरक को पीसकर चटनी बना लें। इसे गौमूत्र में उबालें। जब यह आधा रह जाये तो ठंडा कर छान लें। कीट नियंत्रक तैयार है।

इस 1 लीटर कीट नियंत्रक को 15 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें। ज्यादा कीट होने की स्थिति में सप्ताह में दो बार छिड़काव करें।

बायोगैस

भारत के तराई एवं मैदानी क्षेत्रों में गोबर को उपलों (कण्डों / गोइंठा) के रूप में सुखाकर ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसमें गोबर में मौजूद पौधों के लिए पोषणकारी अधिकांश तत्व नष्ट हो जाते हैं। उपला बनाने में प्रतिदिन करीब एक–दो घंटे समय भी लगता है। अत: खाना पकाने हेतु गोबर के उपलों के स्थान पर गोबर से बायोगैस बनाकर बायोगैस को ईंधन के रूप में प्रयोग करने से पोषक तत्वों की हानि नहीं होती है। क्योंकि बायोगैस से प्राप्त बायोगैस स्लरी में पौधों के लिए उपयोगी सभी पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं (नष्ट नहीं होते हैं)। साथ ही खाना बनाने में धुआँ नहीं होता है। जिससे ग्रहणी की आँखों पर कोई प्रतिकूल असर भी नहीं पड़ता है। बायोगैस स्लरी को सीधे या छाया में सुखाकर या वर्मी कम्पोष्ट बनाकर खाद के रूप में खेतो में प्रयोग करना चाहिए। बायोगैस से आजकल डीजल पम्प सेट भी चला सकते हैं। जिससे डीजल एवं अन्य ऊर्जा की बचत होती है।

लाभ

- बायोगैस (गोबर गैस) पर्यावरण के अनुकूल है। एवं ग्रमीण क्षेत्रों के लिए बहुत उपयोगी है।
- बायोगैस उपलब्ध होने पर खाना पकाने में लगने वाली लकड़ी के उपयोग को कम कर सकते हैं। फलस्वरूप पेड़ों को भी बचाया जा सकता है।
- बायोगैस के उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल (गोबर आदि) के आपूर्ति गाँव से ही पूरी हो जाती है। कहीं और से कच्चे माल को आयात करने की आवश्यकता नहीं है।
- लकड़ी और गोबर के चूल्हे में बहुत धुआँ निकलता है। जो ग्रहणियों के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। परन्तु बायोगैस के प्रयोग से धुआँ नहीं निकलता है। जिससे स्वास्थ्य सबंधी बीमारियों के रोग थाम में सहायता मिलती है।
- यह संयंत्र बायोगैस के साथ-साथ फसल उत्पादन के लिए उच्च गुणवत्ता वाला खाद भी हमें देता है।

जैविक कृषि कार्यक्रम की झलकियाँ अखबारों में

जैविक खेती से किसानों की लागत होगी कम एवं आय में होगी वृद्धिः गगनेश

मध्य स्वदेश ■ गंजबासौदा

ग्राम सलोंई में सूर्या फाउंडेशन के बेनर तले किसानों के लिए जैविक कृषि के लाभ बताने के उद्देश्य से एक कृषि मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें 600 से अधिक किसानों ने पहुंचकर लाभ प्राप्त किया सुबह 9 बजे से प्रारंभ होने वाले कृषि मेले में कई वक्ताओं ने मार्गदर्शन दिया मुख्य वक्ता के रूप में जबलपुर से पधारे क्षेत्रीय जैविक खेती केंद्र के निदेशक डॉ गगनेश ने सैकड़ों की संख्या में पधारे किसानों को बताया कि खेती को आय का धंधा तभी बनाया जा सकता है तब किसान रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर अग्रसर हो डॉ शर्मा ने बताया कि भारत कृषि प्रधान देश है देश की आर्थिक अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित रहती है लेकिन भूमि पुत्र अपनी कृषि के व्यवसाय को तीव्र करने के लिये रासायनिक खेती को अग्रसर होता जा रहा है और जैविक खेती और उससे होने वाले लाभ को भूलता जा रहा है जिसके कारण जमीन की उर्वरा शक्ति खत्म होती जा रही है और जमीनें बंजर होती जा रही है कि जिसके कारण कई बार किसान अपनी लागत का मूल्य भी नही निकाल पाता डॉ

समझें और इसकी ओर अग्रसर हों।

गोबर खाद एवं गौ बंश से करें खेती नरवाई में ना लगाए आग

सूर्या फाउंडेशन द्वारा आयोजित किसान मेले में वक्ताओं ने बताया कि गौ पालन करना चाहिये गौ से जो गोबर प्राप्त होता है अगर का सम्मान करते हुऐ सूर्या फाउंडेशन के वाइस चेयरमैन हेमंत शर्मा ने बताया कि गौ के गोबर से मृदा (मट्टी) की उर्वरा शक्ति बढ़ती है फसलें मजबूत होती हैं कीटनाशक का बचाओ होता है क्योंकि गौ के गोबर शक्ति के कारण फसल में इल्ली कम लगती हैं और फसल का उत्पादन अधिक होता है गोबर

नरवाई में आग से जमीन होती है बंजर

ग्राम सलोंई में आयोजित कृषि मेले मे कृषकों को रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर अग्रसर करते हुऐ बताया कि नरवाई में आग लगाने से हमारे खेत की उर्वरा शक्ति कम होती है और जमीन बंजर होने लगती हैं इसलिये कृषकों को नरवाई मे आग लगाने से परहेज करने की सलाह दी गई कृषि मेले मे बताया गया कि फसलों में लगे कीट इल्ली के लिये सबसे ज्यादा असरदार नुक्सा है गौमूत्र , नीम की पत्ती, धतूरे की पत्ती , आक की पत्ती, लहसुन ,अदरक और मिर्ची के मिश्रण से बने घोल से हमारी फसलों मे लगी इल्ली या कीट कम हो जाएगी और फसल का उत्पादन बढ़ेगा साथ ही लागत कम आएगी और आय भी बढ़ जायेगी कृषि मेले मे पधारे अधिकारियो ने किसानो से अपनी

किसान गोष्ठी में दी उन्नत खेती की जानकारी

खरखौदा। फरूंदा मे सबमिशन आन एग्रीकल्चरल एक्सटेंन्शनन की योजनान्तर्गत किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसानो को सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने की दी गई जानकारी। पुराना शिव मंदिर में कृषि विभाग व सूर्या फाउंडेशन के नेतृत्व मे किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्य क्रम के तहत किसानो को खेती संबधित जानकारी दी गई। कृषि विभाग के सत्यवीर सिंह एडीओ एग्रीकल्चरल मेरठ ने किसानो को खरीफ फसलों की खेती संबधित जानकारी देते बताया कि फसलों में लगने वाले रोगो से बचाव जैविक खाद से खेती करने के लाभ अधिक फसल उत्पादन की जानकारी के साथ भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना एवं किसानो के हित मे चल रही अन्य सरकारी योजनाओ के बारे में भी बताया गया। कृषि विभाग से शिवकुमार वरिष्ठ वैज्ञानिक हस्तिनापुर किसन चंद हरित, डी के शर्मा, सतबीर सिंह तथा प्रमोद आत्रय,सुधीर अग्रवाल, अरुण कुमार, ललित प्रधान, संजीव, संदीप प्रधान रहे।

आदर्श गांव में किसान गोष्ठी का आयोजन

नगर संवाददाता ● भोपाल

आदर्श गांव मुगडला इछावर (सीहोर) में किसान गोष्ठी का कार्यक्रम आयोजित किया गया, सूर्या फाउण्डेशन का लक्ष्य ग्राम विकास की ओर एक कदम बढ़ाते हुए गाँव के ग्राम विकास समिति व किसान समिति के सहयोग से किसानों को सही दिशा देने व उनके लाभ को बढ़ाने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भारतमाता के चित्र पर दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, कार्यक्रम में सूर्या फाउण्डेशन से विकास विश्वकर्मा (15 आदर्श गाँव प्रमुख) ने के छोटे छोटे उपाय बताए जिससे किसानों को अधिक लाभ हो, कम्पोस्ट खाद बनाना, वेस्ट डिकम्पोजर, गोबर गैस से निकलने वाली स्लरी खाद के रूप में बहुत उपयोगी है, कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गाँव के सरपंच कैलाश जी ने बताया हमें जैविक खेती करना चाहिए अपने खेत के एक छोटे से हिस्से में जैविक खेती शुरू करें और धीरे धीरे जैविक की ओर बढ़ें।

कार्यक्रम में मध्यप्रदेश प्रमुख शिव कुमार ने कार्यक्रम की रूपरेखा रखी, गाँव के अच्छे 10 किसानों को सूर्या फाउण्डेशन द्वारा डायरी भेंटकर सम्मानित किया

सूर्या फाउंडेशन द्वारा नयागाँव में किया गया किसान गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन

सिद्धार्थ राव ,बहादुरगढ़ । सूर्या फाउंडेशन नई दिल्ली द्वारा संचालित आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत आज नयागाँव मे किसान गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कृषि विभाग से डॉक्टर अशोक रोहिल्ला, एडीओ प्लांट प्रोटेक्शन ,बहादुरगढ़, रोहित वत्स, सूर्या फाउंडेशन नई दिल्ली से आए श्री प्रमोद आसरे आदर्श ग्राम योजना एवं एकआर मैनेजर, सरपंच जगबीर सैनी और श्रीमान् राजेंद्र जी झींझोली ने भारत माँ के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया व कार्यक्रम की शुरुआत मे दिल्ली से आये अधिकारी प्रमोद आसरे ने सूर्या फाउंडेशन की विभिन्न प्रकल्पों के साथ गांव गांव में इसप्रकर के जागरूकता शिविरों के अयोजान पर प्रकाश डाला और कहां की फाउंडेशन का उद्देश्य है गाँव मे गरीब किसान भाईयो को सरकार की योजनाओं की जानकारी कराना व उन्हे योजनाओं का लाभ पहुँचाना है।

कृषि विभाग से आये डॉ अशोक रोहिल्ला ने बताया की 70 - 80 के दशक में हमारे देश में जनसंख्या अत्याधिक बढ़ रही थी हमारे लिए खाद्यान्न दूसरे देशों पर निर्भर थे व खाद्यान्न फसल पूर्ति के लिए हमें रासायनिक फर्टिलाइजर का प्रयोग किया जिससे हम खाद्यान्न फसल उत्पादन में तो आत्मनिर्भर हुए पर साथ ही रासायनिक खाद के लगातार प्रयोग से मृदा का स्वास्थ्य खराब हुआ और साथ ही साथ हमारे खान पान में हानिकारक तत्व भोजन के माध्यम से लगातार जाते रहे व जिससे हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा और हम विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त हो गए और उन्होंने कहा कि आज रासायनिक खादें हमें विवेक पूर्ण तरीके से इस्तेमाल करना है जिससे कि होने वाले दुष्प्रभाव से बच सकें, उन्होंने साथ ही सरकार की किसानों के लिए चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में अवगत कराया और बताया कि हमें मृदा परीक्षण के बाद ही उर्वरक का इस्तेमाल करना चाहिए व जिससे हमारे मित्र कीट खेत में पर्याप्त मात्रा में जीवित रह सकें व इसके उपरांत डॉक्टर रोहित वत्स ने बताया कि सरकार द्वारा कृषि यंत्रों पर दी जा रही सब्सिडी का लाभ अगर किसान ग्रुप बनाकर आसानी से इसका लाभ उठा सकते हैं और कार्यक्रम के अंत में झिंझोली सोनीपत से आए प्राकृतिक खेती कर रहे सफल किसान श्रीमान राजेंद्र जी ने प्राकृतिक खेती के बारे में विस्तार से किसान भाइयों को बताया और साथ ही पास के गांव जगदलपुर से सफल किसान हरि ओम जी ने अपने अनुभव किसानों के बीच साझा की इस मौके पर मुख्य रूप से अजीत संजय दलाल धर्मबीर गौरव जतिन पवन पूनिया विनोद सैनी रघुनाथ जी बलबीर सिंह जी आदि उपस्थित रहे।

जैविक खेती से ही किसानों का आर्थिक विकास संभव : बिष्ट

➲ जैविक खेती केंद्र भुवनेश्वर व सूर्या फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में जैविक कृषि सम्मेलन आयोजित

खोरीबारी. [illegible] जैविक कृषि सम्मेलन का आयोजन किया गया. [illegible] दार्जीलिंग सांसद राजू बिष्ट उपस्थित हुए. सम्मेलन को संबोधित करते हुए सांसद ने कहा कि [illegible] जैविक खेती से ही किसानों का आर्थिक विकास संभव है.

[illegible]

जैविक कृषि सम्मेलन में लगायी गयी प्रदर्शनी का निरीक्षण करते सांसद राजू बिष्ट.

[illegible]

कृषि सम्मेलन में बताए आय बढ़ाने के उपाय

गंजबासौदा (नवदुनिया न्यूज)। ग्राम सलोंई में जैविक कृषि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें किसानों को जैविक खेती के गुर बताए गये एवं कृषि से आए कैसे बढ़ाएं यह जानकारी दी गई। कार्यक्रम में विदिशा जिले के 600 से अधिक किसानों की सहभागिता रही। आयोजन जबलपुर एवं सामाजिक संस्था सूर्या फाउंडेशन ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

इसमें कृषि विज्ञान केंद्र सीहोर, रायसेन सहित स्वयं सहायता समूह द्वारा भी अपने ग्रामीण उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई। साथ ही किसानों को संलग्न विषय जैसे गौ पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन आदि कई विषयों पर भी जागरूक किया गया। क्षेत्र में जैविक कृषि को प्रोत्साहन देने के लिए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय कृषि केंद्र जबलपुर से आए डॉ. गगनेश शर्मा एवं सूर्या फाउंडेशन के वाइस चेयरमैन हेमंत शर्मा ने क्षेत्र के प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ एसटी पालीवाल ने गौ आधारित कृषि के साथ-साथ गौ उत्पादों की भी जानकारी दी। डॉ. पीके मिश्रा कृषि विश्वविद्यालय गंजबासौदा ने समेकित कृषि प्रणाली के बारे में बताया। कृषि वैज्ञानिक डॉ. शिवराम रघुवंशी ने जैविक खेती के बढ़ते प्रभाव पर अपने विचार साझा किए। ग्राम रतनखेड़ी से आए प्रगतिशील किसान सम्मान सिंह रघुवंशी ने किसानों के साथ अपने जैविक खेती के अनुभवों के बारे में बताया। कार्यक्रम में डॉ. आलोक पाण्डे, डॉ. दीपक गुप्ता, डॉ. एसके बक्शी, डॉ. एसआर कटियार, डॉ. अपर्णा शर्मा ने भी अपने विचारों से किसानों का मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम में किसानों को जैविक खेती की जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक । ● नवदुनिया